सीरत हज़रत सैय्यिदुल मुर्सलीन (स०)

अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला मुजतहिद

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

रब्बना वब्अस फ़ीहिम रसूलम मिन्हुम यतलू अलैइहिम आयातिक व युअल्लिमुहुमुल किताबा वलहिक्मता व युज़क्कीहिम इन्नका अन्तल अज़ीज़ुल हकीम।

(आयत–129 रुकू–15 सूर–ए–बक़रह)

ऐ हमारे परवरदिगार उन लोगों में एक रसूल उन ही में से पैदा फरमा जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर सुनाए और उन्हें किताब व हिकमत की तालीम दे और उन्हें पाक करे यक़ीनन तू बड़ा ज़बरदस्त है बड़ा हिकमत वाला है।

यह हज़रत इब्राहीम (अ0) अल्लाह के दोस्त और हज़रत इस्माईल (अ0) की मुबारक दुआ का बयान है जो उन्होंने उस वक़्त की थी जब अल्लाह के यह पाक बन्दे ख़ान–ए–काबा की बुनियादें बुलन्द कर रहे थे। वह फरमा रहे थेः

''ऐ हमारे परवरदिगार तू हमें अपना फरमाँबरदार बाक़ी रख और हमारी औलाद में से भी एक फरमाँबरदार उम्मत पैदा कर और हमें हमारे हज के अहकाम भी बता दे और हमारे हाल पर ध्यान फरमा कि यक़ीनन तू बड़ा ध्यान देने वाला, बड़ा रहमत वाला है।''

इस दुआ के बाद ही फौरन यह भी अर्ज़ किया गया कि उन लोगों में से उनकी तरफ एक रसूल भी भेज दे। यह जुमला साफ तौर पर इस हक़ीक़त को ज़ाहिर कर रहा है कि ''मिन्हुम'' की ज़मीरे जमा औलादे हज़रत इब्राहीम (अ0) और इसी ख़ास उम्मते मुस्लिमा की तरफ है जिसका बयान इससे पहले हो चुका है और दुआ यह थी कि औलादे इब्राहीम व इस्माईल (अ0) में से एक नबी आए जो उन्हें किताब व हिक्मत की तालीम दे और उनके दिलों को पाक करे। यहूदी व ईसाई कहा करते थे कि नबुवत बनीइस्राईल के साथ ख़ास है मगर अल्लाह ने दिखा दिया कि उसका दिया हुआ ओहद–ए–रिसालत व नबुवत किसी ख़ानदान और किसी नसल के साथ ख़ास नहीं है बल्कि वह जिसे चाहता है उसे बुज़ुर्ग मरतबे के लिए चुन लेता है। सरवरे काएनात (स0) के नामवर दादा हज़रत इब्राहीम (अ0) की दुआ कुबूल हो गयी और यतीमे अब्दुल्लाह, नूरे निगाहे आमिना (अ0), हासिले काएनात, फ़खरे मौजूदात, रसूले उम्मी अरबी क़यामत तक बाक़ी रहने वाली शरीअत लेकर तशरीफ लाए और अहले किताब का यह दावा ग़लत हो गया कि नबुवत व रिसालत बनीइस्राईल ही के लिए ख़ास है।

सरवरे दो आलम (स0) इसी लिए फरमाते थे कि मैं अपने बाप हज़रत इब्राहीम (अ0) की दुआ हूँ। मगर यहाँ यह शक न किया जाए कि हुज़ूर (स0) की बेअ्सत और आपकी नबुवत का ताल्लुक सिर्फ बनी इस्माईल और उम्मते अरब ही से है और दुनिया की दूसरी क़ौमों या अहले किताब से नहीं है इसलिए कि दुआए इब्राहीमी से तो सिर्फ यह बात ज़ाहिर होती है कि आने वाला नबी किस ज़मीन से ज़ाहिर होगा और अपने तबलीग़ी काम की शुरुआत कहाँ से और किस क़ौम से करेगा। इस से यह कहाँ ज़ाहिर होता है कि इस नबी की नबुवत और रिसालत एक ख़ास क़ौम और नसल या महदूद ज़मीन और ज़माने

की पाबन्द होगी और इसी हक़ीक़त को बताने के लिए कि ख़ातमुल अम्बिया (स0) की रिसालत किसी हैसियत से भी महदूद नहीं है कुर्आने हकीम ने जगह–जगह आपकी रिसालत के दर्जों की तशरीह कर दी है। सूर–ए–शोरा आयत–214 में इरशाद हुआ है : ''ऐ नबी तुम अपने क़रीबी रिश्तेदारों को ख़ुदा के अज़ाब से डराओ।'' यह नबुवत व रिसालते मुहम्मदी की पहली मन्ज़िल थी जिसकी शुरुआत रिश्तेदारों और ख़ानदान वालों से हुई थी इसके बाद दूसरी मन्ज़िल वह है जिसे सूर–ए–अन्आम आयत–92, सूर–ए–शूरा आयत–7 में इस जुमले से बताया गया है : ''लितुन्ज़िरा उम्मल कुरा वमन हौलहा'' मतलब यह है कि ऐ रसूल (स0) हम ने तुम पर कुर्आन इसलिए उतारा है कि तुम मक्का वालों और उसके क़रीब रहने वालों को अल्लाह के अज़ाब से डराओं। इस मन्ज़िल के बाद अब तेरी जगह वह है जहाँ रिसालते मुहम्मदी की हदों को और ज़्यादा वुसअत के साथ बयान फरमाया गया है। सूर–ए–सबा आयत–28 में अल्लाह ताला ने इरशाद किया है : ''ऐ रसूल (स0) हम ने तुम्हें सारे ही इन्सानों के लिए भेजा है। ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर लेकिन अकसर लोग नहीं जानते।''

कुर्आने हकीम के इस एलान से ज़ाहिर हो गया कि रिसालते सरवरे दो आलम (स0) का ताल्लुक़ किसी एक ज़माने और किसी ख़ास क़ौम और नसल से नहीं है बल्कि वह क़यामत तक आने वाली तमाम नसलों से ताल्लुक़ रखती है और जो भी इन्सान कहे जाने का मुस्तहक़ है वह इस रिसालत व क़यादत के ज़ेरे इक़तेदार है चाहे वह किसी ज़माने में हो और ज़मीन के किसी भी हिस्से में आबाद हो। रिसालते मुहम्मदी (स0) की इन तीन मन्ज़िलों को बयान करने के बाद फिर यह बताया गया कि इस अज़ीम तरीन नबुवत व रिसालत व इमामत की हदें सिर्फ यहाँ पहुँच कर ख़त्म नहीं हो जातीं बल्कि इसकी वुसअत लामहदूद है। यह न किसी ज़माने के साथ बंधी हुई है और न मौजूदाते आलम की किसी क़िस्म और किसी नौ की पाबन्द है। इस हक़ीक़त को ज़ाहिर करने के लिए सूर–ए–फ़ुरक़ान आयत–1 में फरमाया गया है:

''बहुत बरकत वाली वह ज़ात है जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद स0) पर कुर्आन उतारा ताकि वह तमाम आलमीन के लिए ख़ुदा के अज़ाब से डराने वाला हो।''

इस आम एलान में न तो किसी मख़लूक़ की तख़सीस है, न ज़माने और जगह की क़ैद है, न रंग और ज़मीन का फ़र्क़ है, न जिन व इंस का इम्तियाज़ है और न ज़मीन व आसमान का कोई फ़र्क़ है बल्कि ख़ुद लफ़्ज़ ''आलमीन'' की वुसअत बता रही है कि जिस तरह अल्लाह की ज़ात रब्बुलआलमीन है इसी तरह उसने अपने हबीबे ख़ास और फ़ख़रे मौजूदात (स0) को तमाम आलमीन और सारे जहाँ के लिए अपना रसूले रहमत (स0) बनाया है और वह क़यादत व रिसालत और इमामत जो इससे पहले सिर्फ इन्सानों पर क़ाएम थी अब उसे लामहदूद बनाकर पूरी काएनात और सारी काएनात के ज़र्रे–ज़र्रे को इससे घेर दिया। हज़रत इब्राहीम (अ0) व हज़रत इस्माईल (अ0) ने अपनी दुआ में हज़रत नबी–ए–अरबी (स0) की बेअसत की ग़रज़ भी ज़ाहिर की और ख़ुदा के दरबार में अरज़ की कि वह रसूल (स0) तेरी आयतों को पढ़कर सुनाए। लोगों को किताब व हिकमत की तालीम भी दे और उनके दिलों को पाक भी करे। यह हैं वह फराएज़े रिसालते

उज़्मा जो इन्तिहाई इजमाल और इख़्तेसार के साथ इस मुबारक दुआ के बयान में और कुर्आने हकीम में दूसरे मक़ामात पर जहाँ रसूले उम्मी (स0) का बयान है ज़ाहिर किए गए हैं। इन फ़राएज़ के तीन दरजे बताए गये हैं एक आयाते इलाहिय्या की तिलावत करना यानी रसूले आज़म (स0) का पहला काम और पहली हैसियत यह है कि वह अल्लाह की मख़लूक़ को उसकी आयतें और उसका पैग़ाम और कलाम सुनाएँ और उसकी अज़मत व कुदरत को बयान करें फिर इस पैग़ाम रसानी और तिलावते आयात के बाद दूसरा काम यह है कि वह बहैसियते मुअल्लिमे आज़म अल्लाह की किताब के रुमूज़ व असरार की दुनिया वालों को तालीम भी दें और न सिर्फ किताब की तालीम, बल्कि उम्मत की फिक्री सलाहियतों को सामने लाएँ और उसकी सोई हुई अक़्ली कुव्वतों को जगाएँ और उसे अक़्ल व हिकमत से फाएदा उठाने के रास्ते बताएँ इसलिए कि पैग़ामे इलाही का समझना इस बात पर मौक़ूफ है कि इन्सान अपनी अक़्ल व फ़िक्र का इस्तेमाल सही तरीक़े पर करे और अगर वह ऐसा न कर सका तो कभी हरगिज़ वह इलाही पैग़ाम के रुमूज़ को न समझ सकेगा इसके बाद तीसरा क़दम दिलों की पाकी का है यानी उम्मत के किरदार को पाक करना भी रसूले आज़म (स0) के फ़राएज़ में दाख़िल और आपकी बेअसत के अग़राज़ में शामिल है।

सरवरे दो आलम (स0) ने दुनिया में तशरीफ लाकर अपनी रिसालत व इमामत के पहले फ़र्ज़ को इस तरह पूरा फरमाया कि कुर्आने हकीम की आयतों की तिलावत की और उन्हें पढ़कर सुनाया और अल्लाह का पैग़ाम उसके बन्दों तक बल्कि काएनात के ज़र्रे–ज़र्रे तक पहुँचा दिया और वह आवाज़ जो कोहे हिरा के एक छोटे से ग़ार से उभरी थी कुछ ही लम्हों में हर ख़ुश्क व तर और बहरो बर और ज़मीन व आसमान के गोशे–गोशे में गूँजने लगी। नबी–ए–अरबी (स0) आयाते इलाही की तिलावत करते रहे और अल्लाह अपने हबीब (स0) की तस्दीक़ फरमाता रहा :

''और वह नबी (स0) तो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश से कुछ बोलते ही नहीं यह तो बस वही हि है जो भेजी जाती है'' (सूर–ए–नज्म आयत–3)

हुजूर (स0) ने कुर्आन मजीद की आयतों की तिलावत फरमायी और अल्लाह का वह अज़ीम कलाम दुनिया वालों को सुनाया जिसका हर सूरा, हर आयत और हर लफ़्ज़ मोअजज़ा है और हिदायत व इरशाद से भरा हुआ है। क़यामत तक दुनिया उसकी एक लाइन और एक छोटे जुमले का भी जवाब नहीं ला सकती। इसके बाद आप ने दूसरे फ़र्ज़ को इस तरह पूरा किया कि आयाते इलाहिय्या का मतलब समझाया और उनके असरार व रुमूज़ से इन्सान को आगाह किया और इस पूरी ज़िन्दगी के निज़ाम की मुकम्मल तशरीह कर दी जो अल्लाह ने बनी नौए इन्सान के लिए मुक़र्रर फरमाया है। यहाँ तक कि ज़िन्दगी और मौत दुनिया और आख़ेरत की कोई ऐसी बात बाक़ी न रही जिसकी कोई न कोई बुनियाद रसूले अकरम (स0) की पाक ज़ुबान से न सुनी गयी हो। आपने इबादत के तरीक़े बताए। अख़लाक़ व आदात के सुधार की सूरत समझायीं, मामलात और ज़िन्दगी गुज़ारने के बेहतरीन उसूल की तालीम दी, साथ रहने और अकेले रहने के तरीक़ों की वज़ाहत फरमायी, अल्लाह के हक़ और बन्दों के हक़ के हर रुख़ पर रौशनी डाली और किताब व हिकमत की इस तरह तालीम दी कि अब इन्सान के पास किसी बात के न समझने का कोई बहाना ही बाक़ी न रह सका और फिर आख़िर में

दिल की पाकी और किरदार की पाकी के लिए हर मुमकिन कोशिश फरमायी और इस फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए सबसे पहले ख़ुद अपनी ही सीरते तैय्यबा को पेश फरमाया और कुर्आन पुकार उठा :

''तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (स0) का एक उम्दा नमूना मौजूद है। उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और कसरत के साथ अल्लाह को याद करता हो।''

एक मुअल्लिम और मुस्लेह की हिदायत पूरी तरह दिलों पर उस वक़्त असर करती है जब उसका अमल और उसकी सीरत भी उसके क़ौल के मुताबिक़ हो और वह सीरत व अमल दूसरों से छुपा न हो यही वजह है कि किरदार की पाकी के अज़ीम काम में सरवरे दो आलम (स0) को वह मक़ाम हासिल है जिसकी दूसरी मिसाल हमें नहीं मिलती इसलिए कि बचपने से जवानी और बुढ़ापे तक आपकी सीरते पाक का हर पहलू हमारे सामने मौजूद है जिसमें न कोई परदा और हिजाब है और न कोई शक व शुब्हा और इज्माल व इख़्फ़ा है। इसलिए ज़िन्दगी के क़ाफले के हर क़दम पर हम आपकी सीरते पाक की मिसाल को अपने सामने रखकर अपने किरदार का सुधार और उसको पाक कर सकते हैं और यही वह अकेला रास्ता है जिसमें हमारी दुनियावी और आख़ेरत की कामियाबी और नजात छुपी हुई है।

ख़ुदा हम सब मुसलमानों को उस्व–ए–हसना सरवरे दो आलम (स0) पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। (आमीन)



बक़िया इमामे हसन असकरी (अ0)

इमामे हसन असकरी (अ0) थे जिन्होंने उसके जादू को तोड़कर मुसलमानों के साबित क़दम रहने का सामान फ़राहम किया।

इसके अलावा आपने सच्चे दीन के परस्तारों की दीनी तालीम व तरबियत के फ़रीज़े को नज़रअन्दाज़ नहीं किया। इसके लिए अपनी तरफ से सफरा मुक़र्रर किए जो अपनी इल्मी समझदारी से ख़ुद शरअी मसाएल का जवाब देते थे और जिन मसाएल में इमाम (अ0) से पूछने की ज़रूरत होती थी उनका ख़ुद ही मुनासिब मौक़े पर इमाम (अ0) से जवाब हासिल करके पूछने वाले को मुतमइन कर देते थे। इनही के ज़रिए से ख़ुम्स के माल को जमा किया जाता था और वह तनज़ीमे सादात और दूसरे दीनी कामों में ख़र्च होता था। इस तरह दुनियावी सलतनत के बराबर में दीनी हुकूमत का पूरा इदारा कामियाबी के साथ चल रहा था।

फिर आपने क़ैद व बन्द के इसी शिकंजे में जो बार–बार पड़ता रहा इस्लाम के मआरिफ की ख़िदमत भी जारी रखी। चुनानचे आपकी कुछ अहादीस शीओं की जामे हदीसों में लिखी हैं और कुछ अहलेसुन्नत की किताबों में भी लिखी हैं। इसी तरह आपके शार्गिदों ने भी आपके इल्मी फाएदे तैयार किये हैं।

